Tulsi Chalisa Lyrics with Meaning in Hindi and English

Tulsi Chalisa Lyrics in Hindi

॥ दोहा ॥
जय जय तुलसी भगवती सत्यवती सुखदानी । नमो नमो हरि प्रेयसी श्री वृन्दा गुन खानी ॥
श्री हरि शीश बिरजिनी, देहु अमर वर अम्ब । जनहित हे वृन्दावनी अब न करहु विलम्ब ॥

॥ चौपाई ॥
धन्य धन्य श्री तलसी माता । महिमा अगम सदा श्रुति गाता ॥

हरि के प्राणहु से तुम प्यारी । हरीहीँ हेतु कीन्हो तप भारी ॥

जब प्रसन्न है दर्शन दीन्ह्यो । तब कर जोरी विनय उस कीन्ह्यो ॥

हे भगवन्त कन्त मम होहू । दीन जानी जनि छाडाहू छोहु ॥

सुनी लक्ष्मी तुलसी की बानी । दीन्हो श्राप कध पर आनी ॥

उस अयोग्य वर मांगन हारी । होहू विटप तुम जड़ तनु धारी ॥

सुनी तुलसी हीँ श्रप्यो तेहिं ठामा । करहु वास तुहू नीचन धामा ॥

दियो वचन हरि तब तत्काला । सुनहु सुमुखी जनि होहू बिहाला ॥

समय पाई व्हौ रौ पाती तोरा । पुजिहौ आस वचन सत मोरा ॥

तब गोकुल मह गोप सुदामा । तासु भई तुलसी तू बामा ॥

कृष्ण रास लीला के माही । राधे शक्यो प्रेम लखी नाही ॥

दियो श्राप तुलसिह तत्काला । नर लोकही तुम जन्महु बाला ॥

यो गोप वह दानव राजा । शङ्ख चुड नामक शिर ताजा ॥

तुलसी भई तासु की नारी । परम सती गुण रूप अगारी ॥

अस द्वै कल्प बीत जब गयऊ । कल्प तृतीय जन्म तब भयऊ ॥

वृन्दा नाम भयो तुलसी को । असुर जलन्धर नाम पति को ॥

करि अति द्वन्द अतुल बलधामा । लीन्हा शंकर से संग्राम ॥

जब निज सैन्य सहित शिव हारे । मरही न तब हर हरिही पुकारे ॥

पतिव्रता वृन्दा थी नारी । कोऊ न सके पतिहि संहारी ॥

तब जलन्धर ही भेष बनाई । वृन्दा ढिग हरि पहुच्यो जाई ॥

शिव हित लही करि कपट प्रसंगा । कियो सतीत्व धर्म तोही भंगा ॥

भयो जलन्धर कर संहारा । सुनी उर शोक उपारा ॥

तिही क्षण दियो कपट हरि टारी । लखी वृन्दा दुःख गिरा उचारी ॥

जलन्धर जस हत्यो अभीता । सोई रावन तस हरिही सीता ॥

अस प्रस्तर सम ह्रदय तुम्हारा । धर्म खण्डी मम पतिहि संहारा ॥

यही कारण लही श्राप हमारा । होवे तनु पाषाण तुम्हारा ॥

सुनी हरि तुरतहि वचन उचारे । दियो श्राप बिना विचारे ॥

लख्यो न निज करतूती पति को । छलन चह्यो जब पारवती को ॥

जड़मति तुहु अस हो जड़रूपा । जग मह तुलसी विटप अनूपा ॥

धग्व रूप हम शालिग्रामा । नदी गण्डकी बीच ललामा ॥

जो तुलसी दल हमही चढ़ इहैं । सब सुख भोगी परम पद पईहै ॥

बिनु तुलसी हरि जलत शरीरा । अतिशय उठत शीश उर पीरा ॥

जो तुलसी दल हरि शिर धारत । सो सहस्त्र घट अमृत डारत ॥

तुलसी हरि मन रञ्जनी हारी । रोग दोष दुःख भंजनी हारी ॥

प्रेम सहित हरि भजन निरन्तर । तुलसी राधा में नाही अन्तर ॥

व्यन्जन हो छप्पनहु प्रकारा । बिनु तुलसी दल न हरीहि प्यारा ॥

सकल तीर्थ तुलसी तरु छाही । लहत मुक्ति जन संशय नाही ॥

कवि सुन्दर इक हरि गुण गावत । तुलसिहि निकट सहसगुण पावत ॥

बसत निकट दुर्बासा धामा । जो प्रयास ते पूर्व ललामा ॥

पाठ करहि जो नित नर नारी । होही सुख भाषहि त्रिपुरारी ॥

॥ दोहा ॥
तुलसी चालीसा पढ़ही तुलसी तरु ग्रह धारी । दीपदान करि पुत्र फल पावही बन्ध्यहु नारी ॥
सकल दुःख दरिद्र हरि हार ह्वै परम प्रसन्न । आशिय धन जन लड़हि ग्रह बसही पूर्णा अत्र ॥

लाही अभिमत फल जगत मह लाही पूर्ण सब काम । जेई दल अर्पही तुलसी तंह सहस बसही हरीराम ॥
तुलसी महिमा नाम लख तुलसी सूत सुखराम । मानस चालीस रच्यो जग महं तुलसीदास ॥

Tulsi Chalisa Lyrics Meaning in Hindi

॥ दोहा ॥
जय जय तुलसी भगवती सत्यवती सुखदानी।

- जय हो, हे भगवती तुलसी माता! आप सत्य स्वरूपा हैं और सुख प्रदान करने वाली हैं।

नमो नमो हरि प्रेयसी श्री वृन्दा गुन खानी ॥

- आपको बार-बार प्रणाम, हे भगवान हरि की प्रिय श्री वृन्दा ! आप गुणों की खान हैं।

श्री हरि शीश बिरजिनी, देहु अमर वर अम्ब।

- हे मां ! जो भगवान हरि के मस्तक पर विराजमान हैं, कृपया हमें अमरता का वरदान दें।

जनहित हे वृन्दावनी अब न करहु विलम्ब ॥

- हे वृन्दावनी माता ! जनहित के लिए अब कृपा करके विलंब न करें।

॥ चौपाई ॥
धन्य धन्य श्री तलसी माता। महिमा अगम सदा श्रुति गाता ॥

- धन्य हैं आप, हे तुलसी माता ! आपकी महिमा अनंत है, जिसे वेद-पुराण सदैव गाते हैं।

हरि के प्राणहु से तुम प्यारी। हरीही हेतु कीन्हो तप भारी ॥

- आप भगवान हरि को उनके प्राणों से भी अधिक प्रिय हैं। उनके लिए आपने कठिन तपस्या की।

जब प्रसन्न है दर्शन दीन्ह्यो। तब कर जोरी विनय उस कीन्ह्यो ॥

- जब भगवान प्रसन्न होकर प्रकट हुए, तब आपने हाथ जोड़कर उनसे विनती की।

हे भगवन्त कन्त मम होहू। दीन जानी जनि छाडाहू छोहु ॥

- हे भगवान ! आप मेरे पति बनें। कृपया मुझे दीन जानकर अपनी कृपा से वंचित न करें।

सुनी लक्ष्मी तुलसी की बानी। दीन्हो श्राप कध पर आनी॥

- देवी लक्ष्मी ने तुलसी की यह बात सुनकर उन्हें श्राप दे दिया।

उस अयोग्य वर मांगन हारी। होहू विटप तुम जड़ तनु धारी॥

- लक्ष्मी ने कहा, "तुमने अयोग्य वर की इच्छा की है, इसलिए अब वृक्ष (जड़ शरीर) बन जाओगी।"

सुनी तुलसी हीं श्रप्यो तेहिं ठामा। करहु वास तुहू नीचन धामा॥

- तुलसी ने भी उन्हें श्राप दिया कि "तुम नीच स्थान में वास करोगी।"

दियो वचन हरि तब तत्काला। सुनहु सुमुखी जनि होहू बिहाला॥

- भगवान हरि ने उसी समय तुलसी को वरदान देते हुए कहा, "हे सुमुखी, निराश मत हो।"

समय पाई व्हौ रौ पाती तोरा। पुजिहौ आस वचन सत मोरा॥

- "समय आने पर तुम मेरे पत्तों (तुलसी दल) के रूप में पूजित होगी। मेरा यह वचन सत्य होगा।"

तब गोकुल मह गोप सुदामा। तासु भई तुलसी तू बामा॥

- "तब गोकुल में गोप सुदामा की पत्नी के रूप में तुम तुलसी बनोगी।"

कृष्ण रास लीला के माही। राधे शक्यो प्रेम लखी नाही॥

- भगवान कृष्ण की रासलीला में राधा भी तुम्हारे प्रेम को पूरी तरह समझ नहीं सकीं।

दियो श्राप तुलसिह तत्काला। नर लोकही तुम जन्महु बाला॥

- राधा ने तुलसी को श्राप दिया कि तुम पृथ्वी पर जन्म लोगी।

यो गोप वह दानव राजा। शङ्ख चुड नामक शिर ताजा॥

- तुलसी का पति एक दानव राजा शंखचूड़ था, जो अपने राज्य में शक्तिशाली और प्रसिद्ध था।

तुलसी भई तासु की नारी। परम सती गुण रूप अगारी॥

- तुलसी शंखचूड़ की पत्नी बनीं। वह अत्यंत सती और गुणों की खजाना थीं।

अस द्वै कल्प बीत जब गयऊ। कल्प तृतीय जन्म तब भयऊ॥

- दो कल्प बीतने के बाद तुलसी का तीसरे जन्म में पुनः अवतार हुआ।

वृन्दा नाम भयो तुलसी को। असुर जलन्धर नाम पति को॥

- तीसरे जन्म में तुलसी का नाम वृन्दा रखा गया और उनके पति असुर जलंधर थे।

करि अति द्वन्द अतुल बलधामा। लीन्हा शंकर से संग्राम॥

- जलंधर ने अत्यधिक शक्ति के साथ भगवान शंकर से युद्ध किया।

जब निज सैन्य सहित शिव हारे। मरही न तब हर हरिही पुकारे॥

- जब शिव अपनी सेना सहित पराजित हो गए और जलंधर को न मार सके, तो उन्होंने भगवान हरि से सहायता मांगी।

पतिव्रता वृन्दा थी नारी। कोऊ न सके पतिहि संहारी॥

- वृन्दा अत्यंत पतिव्रता नारी थीं। इसलिए कोई भी उनके पति जलंधर को मार नहीं सकता था।

तब जलन्धर ही भेष बनाई। वृन्दा ढिग हरि पहुच्यो जाई॥

- तब भगवान हरि ने जलंधर का रूप धारण करके वृन्दा के पास पहुंच गए।

शिव हित लही करि कपट प्रसंगा। कियो सतीत्व धर्म तोही भंगा॥

- शिव की सहायता के लिए उन्होंने छलपूर्वक वृन्दा का सतीत्व भंग कर दिया।

भयो जलन्धर कर संहारा। सुनी उर शोक उपारा॥

- इसके बाद जलंधर का संहार हो गया, और यह सुनकर वृन्दा के हृदय में अत्यधिक शोक उत्पन्न हुआ।

तिही क्षण दियो कपट हरि टारी। लखी वृन्दा दु:ख गिरा उचारी॥

- उसी क्षण वृन्दा ने भगवान हरि का कपट समझ लिया और अत्यंत दु:खी होकर रोती हुई बोलीं।

जलन्धर जस हत्यो अभीता। सोई रावन तस हरिही सीता॥

- "जैसे जलंधर का छलपूर्वक वध हुआ, वैसे ही रावण ने भगवान हरि की सीता का हरण किया।"

अस प्रस्तर सम ह्रदय तुम्हारा। धर्म खण्डी मम पतिहि संहारा॥

- "आपका हृदय पत्थर जैसा कठोर है। आपने मेरे धर्म का उल्लंघन कर मेरे पति का संहार कर दिया।"

यही कारण लही श्राप हमारा। होवे तनु पाषाण तुम्हारा॥

- "इसी कारण मैंने आपको श्राप दिया है कि आपका शरीर पाषाण (पत्थर) का हो जाएगा।"

सुनी हरि तुरतहि वचन उचारे। दियो श्राप बिना विचारे॥

- भगवान हरि ने यह सुनकर तुरंत कहा, "आपने बिना सोचे-समझे मुझे श्राप दे दिया।"

लख्यो न निज करतूती पति को। छलन चह्यो जब पारवती को॥

- “आपने अपने पति के कर्मों पर ध्यान नहीं दिया, जिन्होंने देवी पार्वती को छलने की कोशिश की थी।”

जड़मति तुहु अस हो जड़रूपा। जग मह तुलसी विटप अनूपा॥

- “आपकी बुद्धि स्थिर नहीं है, इसलिए आपको जड़ रूप में रहना होगा। किंतु, संसार में तुलसी का वृक्ष अद्वितीय होगा।”

धग्व रूप हम शालिग्रामा। नदी गण्डकी बीच ललामा॥

- “मैं शालिग्राम रूप में रहूंगा और गंडकी नदी के बीच में स्थित होऊंगा।”

जो तुलसी दल हमही चढ़ इहैं। सब सुख भोगी परम पद पईहै॥

- “जो भी भक्त मुझे तुलसी दल (पत्ता) अर्पित करेगा, वह सभी सुख भोगकर परम पद (मोक्ष) प्राप्त करेगा।”

बिनु तुलसी हरि जलत शरीरा। अतिशय उठत शीश उर पीरा॥

- “बिना तुलसी के भगवान हरि का शरीर जलता है, और उन्हें अत्यधिक पीड़ा होती है।”

जो तुलसी दल हरि शिर धारत। सो सहस्त्र घट अमृत डारत॥

- “जो व्यक्ति भगवान हरि के सिर पर तुलसी दल अर्पित करता है, वह सहस्र कलशों के अमृत अर्पण के समान पुण्य प्राप्त करता है।”

तुलसी हरि मन रञ्जनी हारी। रोग दोष दुःख भंजनी हारी॥

- “तुलसी माता भगवान हरि के मन को प्रसन्न करने वाली हैं। वह सभी रोगों, दोषों और कष्टों को दूर करती हैं।”

प्रेम सहित हरि भजन निरन्तर। तुलसी राधा में नाही अन्तर॥

- “जो भक्त प्रेमपूर्वक निरंतर भगवान हरि का भजन करते हैं, उनके लिए तुलसी और राधा में कोई भेद नहीं है।”

व्यन्जन हो छप्पनहु प्रकारा। बिनु तुलसी दल न हरीहि प्यारा॥

- “चाहे छप्पन प्रकार के व्यंजन क्यों न अर्पित किए जाएं, भगवान हरि को बिना तुलसी के वे प्रिय नहीं होते।”

सकल तीर्थ तुलसी तरु छाही। लहत मुक्ति जन संशय नाही॥

- “सभी तीर्थ तुलसी वृक्ष की छाया में स्थित हैं। यहां साधक को बिना किसी संशय के मुक्ति प्राप्त होती है।”

कवि सुन्दर इक हरि गुण गावत। तुलसिहि निकट सहसगुण पावत॥

- “कवि जो भगवान हरि के गुणों का गान करता है, वह तुलसी माता के निकट सहस्र गुणा पुण्य प्राप्त करता है।”

बसत निकट दुर्बासा धामा। जो प्रयास ते पूर्व ललामा॥

- “तुलसी माता के निकट महर्षि दुर्वासा का आश्रम है, जो प्राचीन काल से प्रसिद्ध है।”

पाठ करहि जो नित नर नारी। होही सुख भाषहि त्रिपुरारी॥

- “जो नर-नारी प्रतिदिन तुलसी चालीसा का पाठ करते हैं, वे सुखी होते हैं और भगवान त्रिपुरारी भी उनकी प्रशंसा करते हैं।”

॥ दोहा ॥
तुलसी चालीसा पढ़ही तुलसी तरु ग्रह धारी।

- “जो व्यक्ति तुलसी चालीसा का पाठ करता है और तुलसी का पौधा अपने घर में रखता है, वह सौभाग्य प्राप्त करता है।”

दीपदान करि पुत्र फल पावही बन्ध्यहु नारी॥

- “दीपदान करके, संतानहीन स्त्री को पुत्र-प्राप्ति का फल मिलता है।”

सकल दुःख दरिद्र हरि हार ह्वै परम प्रसन्न।

- “भगवान हरि सभी कष्टों और दरिद्रता को हरकर अत्यंत प्रसन्न होते हैं।”

आशिय धन जन लड़हि ग्रह बसही पूर्णा अत्र॥

- “उनके जीवन में सुख-समृद्धि, धन और परिवार की पूर्णता बनी रहती है।”

लाही अभिमत फल जगत मह लाही पूर्ण सब काम।

- “वे अपने सभी इच्छित फलों को प्राप्त करते हैं और उनके कार्य सफल होते हैं।”

जेई दल अर्पही तुलसी तंह सहस बसही हरीराम॥

- “जो तुलसी का पत्ता अर्पित करते हैं, वहां भगवान हरि स्वयं सहस्र रूपों में वास करते हैं।”

तुलसी महिमा नाम लख तुलसी सूत सुखराम।

- “तुलसी माता की महिमा अपार है। यह चालीसा तुलसीदास के पुत्र सुखराम द्वारा लिखी गई है।”

मानस चालीस रच्यो जग महं तुलसीदास॥

- “यह चालीसा तुलसीदास जी द्वारा संसार के कल्याण के लिए रची गई है।”

Tulsi Chalisa Lyrics in English

॥ Doha ॥
Jay Jay Tulsi Bhagwati Satyawati Sukhdaani॥
Namo Namo Hari Preyasi Shri Vrinda Gun Khaani॥

Shri Hari Sheesh Birajini, Dehu Amar Var Amb॥
Janhit He Vrindavani Ab Na Karahu Vilamb॥

॥ Chaupai ॥
Dhanya Dhanya Shri Tulsi Maata॥ Mahima Agam Sada Shruti Gaata॥

Hari Ke Praanhun Se Tum Pyaari॥ Harihin Hetu Keenho Tap Bhaari॥

Jab Prasann Hai Darshan Deenho॥ Tab Kar Jori Vinay Us Keenho॥

He Bhagwant Kant Mam Hohu॥ Deen Jaani Jani Chhadaahu Chhohu॥

Suni Lakshmi Tulsi Ki Baani॥ Deenho Shraap Kadh Par Aani॥

Us Aayogya Var Maangan Haari॥ Hohu Vitap Tum Jad Tanu Dhaari॥

Suni Tulsi Hin Shrapyo Tehin Thaama॥ Karahu Vaas Tuhu Neechan Dhaama॥

Diyo Vachan Hari Tab Tatkaala॥ Sunahu Sumukhi Jani Hohu Bihala॥

Samay Paai Vhau Rau Paati Tora॥ Pujiho Aas Vachan Sat Mora॥

Tab Gokul Mah Gop Sudaama॥ Tasu Bhai Tulsi Tu Baama॥

Krishna Raas Leela Ke Maahi॥ Radhe Shakyo Prem Lakhi Naahi॥

Diyo Shraap Tulsih Tatkaala॥ Nar Lokahi Tum Janmahu Baala॥

Yo Gop Vah Daanav Raaja॥ Shankh Chud Naamak Shir Taaja॥

Tulsi Bhai Tasu Ki Naari॥ Param Sati Gun Roop Agaari॥

As Dvai Kalp Beet Jab Gayo॥ Kalp Tritiya Janm Tab Bhayo॥

Vrinda Naam Bhayo Tulsi Ko॥ Asur Jalndhar Naam Pati Ko॥

Kari Ati Dwand Atul Baldhaama॥ Leenha Shankar Se Sangraama॥

Jab Nij Sainya Sahit Shiv Haare Marahi Na Tab Har Harihi Pukaare

Pativrata Vrinda Thi Naari Koo Na Sake Patihi Sanhaari

Tab Jalandhar Hi Bhes Banaai Vrinda Dhig Hari Pahuchyo Jaai

Shiv Hit Lahi Kari Kapat Prasanga Kiyo Sati Tv Dharma Tohi Bhanga

Bhayo Jalandhar Kar Sanhaara Suni Ur Shok Upaara

Tihi Kshan Diyo Kapat Hari Taari Lakhi Vrinda Dukh Gira Uchaari

Jalandhar Jas Hatyo Abheeta Soi Raavan Tas Harihi Seeta

As Prastar Sam Hriday Tumhaara Dharma Khandi Mam Patihi Sanhaara

Yahi Kaaran Lahi Shraap Hamaara Hove Tanu Paashaan Tumhaara

Suni Hari Turatahi Vachan Uchaare Diyo Shraap Bina Vichaare

Lakhyo Na Nij Karatuti Pati Ko Chhalan Chahyo Jab Paarvati Ko

---

Jadmati Tuhu As Ho Jadroopa Jag Mah Tulsi Vitap Anupa

Dhagv Roop Hum Shaligrama Nadi Gandaki Beech Lalama

Jo Tulsi Dal Hamahi Chad Ihain Sab Sukh Bhogi Param Pad Paihain

Binu Tulsi Hari Jalat Shareera Atishay Uthat Sheesh Ur Peera

Jo Tulsi Dal Hari Shir Dhaarata So Sahastra Ghat Amrit Daarata

Tulsi Hari Man Ranjani Haari Rog Dosh Dukh Bhanjani Haari

Prem Sahit Hari Bhajan Nirantar Tulsi Radha Mein Naahi Antar

Vyanjan Ho Chhappanhun Praakara Binu Tulsi Dal Na Harihi Pyaara

---

Sakal Teerth Tulsi Taru Chhaahi Lahat Mukti Jan Sanshay Naahi

Kavi Sundar Ik Hari Gun Gaavat Tulsihi Nikat Sahasgun Paavat

Basat Nikat Durbasa Dhaama Jo Prayas Te Poorva Lalama

Paath Karahi Jo Nit Nar Naari Hohi Sukh Bhaashahi Tripuraari

Doha
Tulsi Chalisa Padhahi Tulsi Taru Grah Dhaari
Deepdaan Kari Putra Phal Paavahi Bandhyahu Naari

Sakal Dukh Daridr Hari Haar Hvai Param Prasanna
Aashiy Dhan Jan Ladhahi Grah Basahi Poorna Atra

Laahi Abhimat Phal Jagat Mah Laahi Poorna Sab Kaam
Jei Dal Arphahi Tulsi Tanh Sahas Basahi Hariraam

Tulsi Mahima Naam Lakh Tulsi Soot Sukhaaram
Maanas Chaalees Rachyo Jag Mah Tulsidaas

Tulsi Chalisa Meaning in English

Doha
Jay Jay Tulsi Bhagwati Satyawati Sukhdaani

- Hail, hail, O Goddess Tulsi! You are the embodiment of truth and the giver of happiness.

Namo Namo Hari Preyasi Shri Vrinda Gun Khaani

- I bow to you repeatedly, O beloved of Lord Hari, O Vrinda, treasure house of virtues.

Shri Hari Sheesh Birajini, Dehu Amar Var Amb

- O Mother, who adorns the head of Lord Hari, grant us the boon of immortality.

Janhit He Vrindavani Ab Na Karahu Vilamb

- O Mother Vrindavani, for the welfare of all beings, delay no longer in bestowing your grace.

Chaupai
Dhanya Dhanya Shri Tulsi Maata Mahima Agam Sada Shruti Gaata

- Blessed, blessed is Mother Tulsi! The scriptures eternally sing of your immeasurable glory.

Hari Ke Praanhun Se Tum Pyaari Harihin Hetu Keenho Tap Bhaari

- You are dearer to Lord Hari than even his own life. You performed intense penance for his sake.

Jab Prasann Hai Darshan Deenho Tab Kar Jori Vinay Us Keenho

- When Lord Hari became pleased and appeared before you, you folded your hands and humbly prayed to him.

He Bhagwant Kant Mam Hohu Deen Jaani Jani Chhadaahu Chhohu

- “O Lord! Be my husband. Do not abandon me, knowing me to be a humble being.”

Suni Lakshmi Tulsi Ki Baani Deenho Shraap Kadh Par Aani

- Hearing this, Goddess Lakshmi became angry and cursed Tulsi.

Us Aayogya Var Maangan Haari Hohu Vitap Tum Jad Tanu Dhaari

- Lakshmi said, “You have sought an unworthy husband. You will now take the form of a tree.”

Suni Tulsi Hin Shrapyo Tehin Thaama Karahu Vaas Tuhu Neechan Dhaama

- Tulsi also cursed Lakshmi in return, saying, “You will reside in a lowly place.”

Diyo Vachan Hari Tab Tatkaala Sunahu Sumukhi Jani Hohu Bihala

- Lord Hari immediately gave a promise, saying, “O beautiful one, do not despair.”

Samay Paai Vhau Rau Paati Tora Pujiho Aas Vachan Sat Mora

- “In due time, you will become a sacred plant, and you will be worshiped as per my truthful promise.”

Tab Gokul Mah Gop Sudaama Tasu Bhai Tulsi Tu Baama

- “Later, you will be born as the wife of a Gokul cowherd named Sudama.”

Krishna Raas Leela Ke Maahi Radhe Shakyo Prem Lakhi Naahi

- In Krishna’s Raas Leela, even Radha could not fully comprehend your love for him.

Diyo Shraap Tulsih Tatkaala Nar Lokahi Tum Janmahu Baala

- Radha cursed you to be reborn in the mortal world.

Yo Gop Vah Daanav Raaja Shankh Chud Naamak Shir Taaja

- You became the wife of a demon king named Shankhchud, a mighty ruler.

Tulsi Bhai Tasu Ki Naari Param Sati Gun Roop Agaari

- Tulsi became his devoted wife, known for her supreme chastity and virtues.

As Dvai Kalp Beet Jab Gayo Kalp Tritiya Janm Tab Bhayo

- After two eons passed, in the third cycle, Tulsi was reborn once again.

Vrinda Naam Bhayo Tulsi Ko Asur Jalndhar Naam Pati Ko

- She was named Vrinda, and her husband was the demon king Jalandhar.

Kari Ati Dwand Atul Baldhaama Leenha Shankar Se Sangraama

- Jalandhar, with immense power, engaged in a fierce battle with Lord Shiva.

Jab Nij Sainya Sahit Shiv Haare Marahi Na Tab Har Harihi Pukaare

- When Shiva was defeated and could not kill Jalandhar, he called upon Lord Vishnu for help.

Pativrata Vrinda Thi Naari Koo Na Sake Patihi Sanhaari

- Vrinda was a devoted wife, and as long as her chastity remained intact, no one could harm her husband.

Tab Jalandhar Hi Bhes Banaai Vrinda Dhig Hari Pahuchyo Jaai

- Lord Vishnu took the form of Jalandhar and approached Vrinda.

Shiv Hit Lahi Kari Kapat Prasanga Kiyo Sati Tv Dharma Tohi Bhanga

- For Shiva’s welfare, Vishnu tricked Vrinda and broke her vow of chastity.

Bhayo Jalandhar Kar Sanhaara Suni Ur Shok Upaara

- Afterward, Jalandhar was killed, and upon hearing the news, Vrinda was filled with grief.

Tihi Kshan Diyo Kapat Hari Taari Lakhi Vrinda Dukh Gira Uchaari

- At that moment, Vrinda recognized Vishnu's deception and cried out in sorrow.

Jalandhar Jas Hatyo Abheeta Soi Raavan Tas Harihi Seeta

- She said, "Just as Jalandhar was slain by deceit, so did Ravana abduct Hari's consort, Sita."

As Prastar Sam Hriday Tumhaara Dharma Khandi Mam Patihi Sanhaara

- "Your heart is like stone. You have violated my dharma and killed my husband."

Yahi Kaaran Lahi Shraap Hamaara Hove Tanu Paashaan Tumhaara

- "For this reason, I have cursed you to take a stone form."

Suni Hari Turatahi Vachan Uchaare Diyo Shraap Bina Vichaare

- Lord Vishnu replied, "You gave this curse without understanding the truth."

Lakhyo Na Nij Karatuti Pati Ko Chhalan Chahyo Jab Paarvati Ko

- "You did not notice your husband's own wrong deeds, as he tried to deceive Parvati."

Jadmati Tuhu As Ho Jadroopa Jag Mah Tulsi Vitap Anupa

- "You were ignorant of your husband's deeds; therefore, you will take a stationary, tree-like form. Yet, you will become the unique Tulsi plant in the world."

Dhagv Roop Hum Shaligrama Nadi Gandaki Beech Lalama

- "I will take the form of Shaligrama and reside as a sacred stone in the Gandaki River."

Jo Tulsi Dal Hamahi Chad Ihain Sab Sukh Bhogi Param Pad Paihain

- “Those who offer Tulsi leaves to me will enjoy worldly pleasures and ultimately attain liberation (the supreme abode).”

Binu Tulsi Hari Jalat Shareera Atishay Uthat Sheesh Ur Peera

- “Without Tulsi leaves, Lord Hari’s body burns with intense pain and restlessness.”

Jo Tulsi Dal Hari Shir Dhaarata So Sahastra Ghat Amrit Daarata

- “Whoever places a Tulsi leaf on Lord Hari’s head earns merit equivalent to offering a thousand pots of nectar.”

Tulsi Hari Man Ranjani Haari Rog Dosh Dukh Bhanjani Haari

- “Tulsi pleases Lord Hari’s heart and removes diseases, sins, and suffering.”

Prem Sahit Hari Bhajan Nirantar Tulsi Radha Mein Naahi Antar

- “Devotees who worship Lord Hari with love experience no difference between Tulsi and Radha.”

Vyanjan Ho Chhappanhun Praakara Binu Tulsi Dal Na Harihi Pyaara

- “Even if fifty-six types of delicacies are offered, they are not dear to Lord Hari without Tulsi leaves.”

Sakal Teerth Tulsi Taru Chhaahi Lahat Mukti Jan Sanshay Naahi

- “All holy places are encompassed under the shade of the Tulsi tree. There is no doubt that

those who worship there attain liberation.”

Kavi Sundar Ik Hari Gun Gaavat Tulsihi Nikat Sahasgun Paavat

- “A poet praising Lord Hari’s qualities attains a thousandfold merit when doing so near Tulsi.”

Basat Nikat Durbasa Dhaama Jo Prayas Te Poorva Lalama

- “The sacred hermitage of Sage Durvasa is located near the Tulsi plant, famous from ancient times.”

Paath Karahi Jo Nit Nar Naari Hohi Sukh Bhaashahi Tripuraari

- “Men and women who regularly recite this Tulsi Chalisa attain happiness, and even Lord Shiva (Tripuraari) praises them.”

Doha
Tulsi Chalisa Padhahi Tulsi Taru Grah Dhaari

- “Those who recite the Tulsi Chalisa and keep a Tulsi plant at home experience divine blessings.”

Deepdaan Kari Putra Phal Paavahi Bandhyahu Naari

- “Childless women who offer lamp lighting (deepdaan) at Tulsi plants are blessed with children.”

Sakal Dukh Daridr Hari Haar Hvai Param Prasanna

- “All their miseries and poverty are removed by Lord Hari, who becomes extremely pleased.”

Aashiy Dhan Jan Ladhahi Grah Basahi Poorna Atra

- “They enjoy prosperity, wealth, and family bliss, and their homes become fulfilled with happiness.”

Laahi Abhimat Phal Jagat Mah Laahi Poorna Sab Kaam

- “They receive all their desired wishes and complete all tasks successfully.”

Jei Dal Arphahi Tulsi Tanh Sahas Basahi Hariraam

- “Wherever Tulsi leaves are offered, Lord Hari resides there in countless forms.”

Tulsi Mahima Naam Lakh Tulsi Soot Sukhaaram

- “The greatness of Tulsi is vast and limitless. This Chalisa was composed by Tulsi Das’s descendant, Sukhaaram.”

Maanas Chaalees Rachyo Jag Mah Tulsidaas

- “This Chalisa was composed by Tulsidas for the welfare of the world.”